

Research Article

18वीं शताब्दी में सहारनपुर और आस-पास के क्षेत्रों में सत्ता-संघर्ष: एक ऐतिहासिक अध्ययन

दीपक कुमार¹, विकास कुमार²

¹असिस्टेंट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक, इतिहास विभाग, एस० एस०वी० कॉलेज, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

²शोध छात्र इतिहास विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: <https://www.doi.org/10.24321/2456.0510.202619>

INFO

Corresponding Author:

विकास कुमार, शोध छात्र इतिहास विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत |

E-mail Id:

vk210461@gmail.com

Orcid Id:

<https://orcid.org/0009-0008-2325-822X>

How to cite this article:

दीपक कुमार, विकास कुमार, 18वीं शताब्दी में सहारनपुर और आस-पास के क्षेत्रों में सत्ता संघर्ष: एक ऐतिहासिक अध्ययन, Anu: a, Mul, Int, Jour, 2026; 11(3&4): 40-49.

Date of Submission: 2026-06-18

Date of Acceptance: 2026-07-25

ABSTRACT

यह शोध पत्र उत्तर मुगलकालीन भारत में सहारनपुर जिले की 1707 से 1803 तक की स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। औरंगजेब की मृत्यु के बाद केन्द्रीय शक्ति का विघटन और क्षेत्रीय शक्तियों का उदय होने लगा। योग्य उत्तराधिकारियों के अभाव व उत्तराधिकार के युद्धों ने दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों में एक खालीपन की स्थिति उत्पन्न कर दी। इसका सीधा प्रभाव सहारनपुर और आस पास के क्षेत्रों पर पड़ना लाजिमी था। दिल्ली की कमजोर पकड़ के चलते क्षेत्रीय जागीरदार, नवाब मराठे अपना-अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की कोशिश में जुटे थे। नादिर शाह, अब्दाली जैसे आक्रमणकारियों के हमले भी शुरू हो रहे थे। मराठे उत्तर भारत में जोरदार दस्तक दे रहे थे उनके आक्रमणों ने सहारनपुर के आस-पास के क्षेत्रों की स्थिति को और विकट बना दिया साथ ही साथ इसी कालखंड में सिक्खों के भी गंगा यमुना दोआब में लगातार आक्रमण हो रहे थे। यह शोधपत्र 18वीं शताब्दी में सहारनपुर और उसके आस पास के क्षेत्रों में सत्ता-संघर्ष, सैन्य क्रियाकलापों का विश्लेषण करता है। यह शोध पत्र सहारनपुर की तत्कालीन मुगल साम्राज्य की केन्द्रीय राजनीति में जो भूमिका रही है उस पर समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: बंदा बहादुर, सिक्ख आक्रमण, नजीबउद्दौला, जाबिता खां, गंगा-यमुना दोआब।

प्रस्तावना

औरंगजेब की मृत्यु के बाद जहाँ एक ओर सैय्यद बंधुओं की शक्ति का उदय हो रहा था वहीं दूसरी ओर सिक्खों में भी अंतिम सिक्ख गुरु गोविन्द सिंह के बाद बंदा बहादुर संज्ञक एक वीर साहसी, पराक्रमी योद्धा का उदय हो रहा था अपने जीवन के आखिरी दिनों में 5 अक्टूबर 1708 ई० को गुरु गोविंद सिंह ने बंदा बहादुर को खालसा सेना का मुख्य सेनापति नियुक्त करते हुये मातृभूमि की रक्षा हेतु रण में सम्मिलित होने के लिए एक हुकुमनामा (शाही फरमान) जारी किया। बंदा बहादुर ने इसे सहर्ष स्वीकार करते हुये एक वर्ष के अंदर खालसा सेना को पुनः संगठित किया अपने सैनिकों के अंदर उत्साह का संचार किया और अपने अभियान की शुरुआत की और 26 नवम्बर 1709 ई० में सर्वप्रथम समाना पर अपना विजय परचम फहराया।¹

उस समय सहारनपुर पर मुस्लिमों का शासन हुआ करता था। सिक्खों द्वारा शहर पर कब्जा करने के बाद वहाँ रहने वाले कुलीन वर्ग के मुसलमानों ने वहाँ अपने लिए परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं समझी और वे धीरे-धीरे वहाँ से पलायन करने लगे। बंदा सिंह बहादुर ने कई दिनों तक यहाँ डेरा डाले रखा और वहाँ के हालातों का जायजा लिया और इस शहर (सहारनपुर) का नाम बदलकर भागन वाला नगर अर्थात् भाग नगर रख दिया। फिर उन्होंने सिक्खों की एक टुकड़ी पीरजादों के खिलाफ भेजी। सिक्खों को सहारनपुर शहर पर कब्जा करने में ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ा। शीघ्र ही शहर पर कब्जा हो गया फिर सभी पीरजादों को एक खुले मैदान में बुलाया गया और उनके सारे अत्याचारों को जनता के सामने रखा गया। पीरजादे बलात्कार, दुष्टता के अनेकों कार्यों के दोषी पाये गये। सिक्खों ने सभी को जनता के सामने कत्ल कर दिया।²

सिक्खों ने बेहट पर कब्जा करने के बाद जलालगढ़ी पर आक्रमण करने की तैयारी कर ली। दूसरी तरफ जलालुद्दीन खान को भी सिक्खों की इस योजना की खबर लग गयी और वह भी युद्ध की तैयारियों में जुट गया। उसने मुस्लिम सैनिकों में जोश भरने के लिए इसे जेहाद का नाम दिया और साथ ही किले के अंदर कई महीनों का राशन जमा कर लिया। सिक्खों ने किले की घेराबंदी कर दी जो लगभग तीन हफ्ते तक चली। बारिश होने लगी, खराब मौसम के चलते सिक्ख सेना को अपना घेरा उठाना पड़ा। इस प्रकार सिक्ख सेना अपने उद्देश्य की पूर्ति में असफल रही। अब सिक्ख सेना का लक्ष्य जलालगढ़ी किले पर कब्जा करने का था क्योंकि इसी किले में जलाल खान का सारा खजाना और शस्त्र रखे हुये थे।³

जलालाबाद में असफल होने के बाद सिक्खों ने सहारनपुर लौटते समय गंगोह और नकुड़ के बीच स्थित अंबेहटा पर आक्रमण किया। इस हमले में जलालुद्दीन का बेहद करीबी पीर खां मारा गया जो अंबेहटा का सिपेहसालार था परन्तु सिक्ख सेना को राढ़ के पास केहरा नामक गाँव में जलाल खाँ के पोते गुलाम मोहम्मद बनिपारा और पीर मोहम्मद की संयुक्त सेना से लड़ना पड़ा। विरोधी सेना सिक्ख सेना से कहीं ज्यादा बड़ी थी, परिस्थितियों को भांपते हुए सिक्ख सेना पीछे हट गयी। इस युद्ध में सिक्खों ने भारी संख्या में अस्त्र-शस्त्र और सैनिक गंवाये। भले ही इन मोर्चों पर सिक्ख सेना असफल रही परन्तु दूसरी सिक्ख टुकड़ियाँ बुरिया पर अपना परचम फहरा चुकी थी। इस बुरिया विजय में वीर गुलाब सिंह बक्शी के शौर्य पराक्रम की अहम भूमिका थी। बंदा बहादुर ने इस विजय को गुलाब सिंह को समर्पित करते हुए इस कस्बे को गुलाब नगर का नाम दे दिया। अब सिक्खों का अगला निशाना नानौता था, नानौता के प्रशासक

भी जनता पर अत्याचारों के लिए जाने जाते थे। सिक्खों ने संघर्ष के बाद शहर पर विजय पा ली और अमीर कुलीन वर्ग के लोगों से धन-दौलत, शस्त्र आदि लूट लिये। जिन घरों में सिक्ख सेना का विरोध हुआ वे घर, हवेलियाँ जला दिये गये। जब सिक्ख सेना इस कस्बे से निकली तो यह कस्बा उजड़ चुका था। यद्यपि ऐसा नहीं कि यहाँ संघर्ष नहीं करना पड़ा, खफ़ी खाँ मुन्तखब उल लूबाब में लिखता है कि जलाल खान ने नानौता की सुरक्षा के लिए अपने बेटे दिनदार खाँ, अपने भांजे गुलाम मोहम्मद के लिए अपने भतीजे हजबर खान को नानौता में सिक्ख सेना के विरुद्ध भेज दिया। भीषण युद्ध हुआ हजबर खान, सहारनपुर के प्रमुख मोहम्मद अली खान के दो भतीजे पीर खान और जमाल खान इस युद्ध में मारे गये।⁴ इनकी मृत्यु के बाद भी दिनदार खान बहादुरी से लड़ा परन्तु वह पराजित हुआ। जलाल खाँ द्वारा जलालगढ़ी और अंबेहटा में सिक्खों का जबदरस्त प्रतिरोध किये जाने की खबर जब मुगल बादशाह बहादुर शाह प्रथम तक पहुँची तो मुगल बादशाह ने सिक्खों के आक्रमण के समय कायरता का प्रदर्शन करने वाले सहारनपुर के प्रभारी मोहम्मद अली खाँ को सहारनपुर की सरदारी के पद से बर्खास्त करते हुए जलाल खाँ को सहारनपुर का प्रमुख बना दिया।

बंदा बहादुर ने गुरु गोविंद सिंह के दो पुत्रों को दीवार में जिंदा चुनवाने वाले वजीर खान को सबक सिखाने का निश्चय कर सरहिंद पर हमला कर दिया और वह अपने उद्देश्य में सफल भी हुआ। उसने वजीर खान से गुरु के पुत्रों की शहादत का बदला लिया। सिक्खों की सरहिंद विजय ने जनता का दृष्टिकोण ही बदल कर रख दिया। दूसरे धर्मावलंबी भी सिक्ख धर्म की ओर आकृष्ट होने लगे। उगते हुए सूरज को ही अभिवादन किया जाता है ये कहावत यहाँ चरितार्थ हो रही थी। बहुत से मुस्लिम भी सिक्ख धर्म में आ गये। इनमें मीर नसीरुद्दीन जो नासिर सिंह बन गया और जलाल खान रुहिया का बेटा दिनदार खान जो दिनदार सिंह बन गया, शामिल थे। हालांकि बंदा सिंह के बलिदान के बाद ये पुनः इस्लाम में शामिल हो गये। ये वही दिनदार खान था जिसने 1713 ई० में सैय्यद बंधुओं के साथ हाथ मिलाकर फर्रुखसियर को दिल्ली का बादशाह बनाने में अहम भूमिका निभाई थी और फिर इसी दिनदार खान ने ही उसी फर्रुखसियर को महलों से घसीटते हुए अंधा कर दिया और बाद में हत्या कर दी।⁵

सिक्खों की जीत से प्रेरित देवबंद के आस पास के क्षेत्रों के भी कुछ लोग सिक्ख धर्म में शामिल हो गये जब मुस्लिम सरदार जलालुद्दीन को पता चला तो उसने धर्म परिवर्तित करने वाले लोगों को दंडित किया। कठोर यातनाएँ दी जब ये खबर बंदा सिंह को मिली तो उसने तुरंत देवबंद पर हमला कर उस पर अधिकार कर लिया। जलालाबाद पर भी हमला करने की योजना थी परन्तु जलालाबाद पर हमला करने से पहले उसने सहारनपुर पर कब्जा करने का फैसला किया। सरहिंद व हिसार फिरोजा की तरह सहारनपुर भी एक बड़ी रियासत थी जिसमें 28 परगनें शामिल थे।

1714 ई० में फर्रुखसियर के शासन काल में सिक्खों ने दोआब में कोई हलचल नहीं की। इसके कुछ समय पश्चात् उन्होंने पंजाब में अभियान छेड़ दिया। लाहौर से लेकर सरहिंद तक सब तहस-नहस करते हुए मुगल सत्ता को हिला कर रख दिया। एक बार फिर गंगा-यमुना दोआब वाले मुगल क्षेत्र पर बंदा बहादुर के आक्रमण का खतरा मंडरा रहा था परन्तु इस बार भाग्य सिक्खों के साथ नहीं था। लाहौर के मुगल गर्वनर अब्दुल समद खान ने एक घमासान युद्ध में सिक्ख सेना को पराजित कर दिया और उनके नेता बंदा बहादुर को बंदी बना लिया। जिसे बाद में घोर यातना देकर मौत के घाट उतार दिया गया।

बंदा बहादुर की शहादत के बाद सिक्ख सेना कमजोर पड़ गयी फिर वे कई वर्षों तक बिल्कुल शांत हो गये और अपनी खोई हुई शक्ति को संगठित करते रहे। सहारनपुर और आस पास के क्षेत्रों में अब सिक्खों के आक्रमण का खतरा काफी वर्षों के लिए टल गया था। इसके पीछे एक कारण बारहा के सैय्यदों का बढ़ता हुआ प्रभाव था। 1712 ई० के बाद सैय्यद बंधुओं ने अपनी शक्ति का तेजी से विस्तार करना आरंभ किया और देखते ही देखते वे सहारनपुर और मुजफ्फरनगर में सर्वेसर्वा हो गये। उनकी सफलता उनके विरोधियों को पच नहीं रही थी। उनके खिलाफ घृणा, संदेह और षड़यंत्रों का माहौल बन गया था और यह माहौल शीघ्र ही गृह युद्ध में बदल गया। मुहम्मद शाह रंगीला की शह पर ईरानी व तुरानी गुटों ने सैय्यद बंधुओं के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। 9 अक्टूबर 1720 ई० को मालवा की ओर जाते हुए एक तुरानी सैनिक हैदर खां ने सैय्यद हुसैन अली की हत्या कर दी और दूसरे भाई अब्दुल्ला खाँ को 13 नवम्बर 1720 ई० को हसनपुर के स्थान पर हराकर बंदी बना लिया गया और बाद में विष देकर मार दिया गया।⁶ इस प्रकार नृप निर्माता के नाम से मशहूर सैय्यद बंधुओं का दौर समाप्त हुआ।

सैय्यद बंधुओं की जागीरें मुहम्मद अमीन खान को दे दी गईं लेकिन इससे पहले कि वह जिले में अपना पूर्ण अधिकार जमा पाता, 1721 ई० में ही उसकी भी मृत्यु हो गई उसके बाद सैय्यदों का कट्टर दुश्मन रहा, वजीर कमरुद्दीन आया। वह लंबे समय तक साम्राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी सेवायें दे चुका था। उसने चतुराई से काम लिया और धीरे-धीरे सैय्यदों को सभी महत्वपूर्ण पदों से हटाने की रणनीति अपनाई लेकिन अंततः 1737 ई० में जब उसे यह आभास हो गया कि वह अपने उद्देश्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पा रहा है तो उसने अपने दुश्मनों को समूल नष्ट करने का फैसला कर लिया और अपने इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उसने मरहमत खां को सहारनपुर का गवर्नर बनाकर भेजा और सैय्यदों की सभी जागीरें छीन लेने का आदेश जारी किया। इस आदेश को क्रियान्वित करने में मरहमत खां ने इतनी निर्दयता व दरिदंगी से काम लिया कि सारे सैय्यदों ने संगठित होकर उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया। इसने वजीर को वह अवसर प्रदान किया जिसकी तलाश उसे बरसों से थी उसने तुरानियों और अफगानियों की एक विशाल सेना गठित की और रोहिला सरदार अली मुहम्मद के नेतृत्व में सैय्यदों के मुख्यालय जानसठ पर आक्रमण कर दिया। सैय्यद अपनी जान बचाकर दूसरे क्षेत्रों में भाग गये। सैय्यदों की छोड़ी गयी जागीरों को अजीमउल्लाह ने प्राप्त किया और जिले में अपना अधिकार स्थापित किया। वर्ष 1739 ई० में नादिर शाह द्वारा दिल्ली पर अधिकार कर लेने के बाद दिल्ली और आस पास के क्षेत्रों में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गयी।⁷ यही वह समय था जब रोहिला सरदारों ने दोआब में अपना प्रभाव बढ़ाना शुरू किया। 1740 ई० में स्थिति बदली ओर अजीमउल्लाह को मालवा भेज दिया गया तथा सहारनपुर हफीजउद्दीन को सौंप दिया गया लेकिन दो साल बाद उसके तुरानी सरदारों से सम्बन्ध खराब हो गये। परिणामस्वरूप उसे उसके पद से हटा दिया गया।

मुहम्मद शाह रंगीला के समय एक व्यक्ति का सितारा चमका जिसे जफर खान अथवा रोशनउद्दौला कहा जाता था। जिसने चाँदनी चौक में एक खूबसूरत मस्जिद भी बनवाई इसी जफर खान ने शाह को अंबेहटा सौंपा था। वह एक ऐसे व्यक्ति की परंपरा को आगे बढ़ा रहा था जिसने अपनी हिम्मत, अपनी वीरता के बल पर दिल्ली को सफ्दरगंज के हमलों से सुरक्षित रखा था। बाद में आलमगीर द्वितीय ने उसे अमीर उल उमरा का पद देते हुये नजीबउद्दौला की उपाधि प्रदान की। नजीबउद्दौला की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा

से वजीर गाजीउद्दीन ईर्ष्या रखने लगा। उसने नजीबउद्दौला से उसका पद छीन लिया और ऐसी विषम परिस्थिति पैदा कर दी कि नजीबउद्दौला को सहारनपुर जाने के लिए विवश होना पड़ा। वहाँ उसने गाजीउद्दीन से जान बचाकर भागते फिर रहे भगौड़े राजकुमार अली गौहर को शरण दी और खर्चों के लिए 50,000 रुपये मासिक दिये।⁸ जब गाजीउद्दीन को ये पता चला तो उसने सिंधिया को रोहिलों पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया और इस कार्य हेतु झनकू को एक विशाल सेना लेकर भेजा। नजीबउद्दौला को जान बचाने के लिए शुक्रताल दुर्ग में छिपना पड़ा जो बुरे वक्त में हमेशा उसका रक्षा कवच बना।

उधर झनकू ने कमाण्डर गोविंद पंडित को आदेश दिया कि वह हरिद्वार में गंगा नदी को पार करके बिजनौर को नष्ट कर दे। ऐसी विकट समस्या में घिरे हुए नजीबउद्दौला ने रोहिला सरदारों तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला से सहायता मांगी और साथ ही साथ अहमद शाह अब्दाली से भी मदद की गुहार लगाई। परिणामस्वरूप शुजाउद्दौला ने रोहिलखंड से आक्रमणकारियों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया साथ ही अपनी सैन्य हलचलों से शुक्रताल पर से दबाव कम कर दिया। दूसरी ओर गाजीउद्दीन भी झनकू की सहायता के लिए चल दिया परन्तु शुक्रताल पर दबाव कम होने का नजीबउद्दौला ने लाभ उठाया और वह वहाँ से निकलकर सहारनपुर आ गया और अफगान आक्रांता अहमद शाह अब्दाली से हाथ मिला लिया। फिर इससे प्रोत्साहित होकर उसने झनकू को एक झड़प में हरा दिया। नजीबउद्दौला ने आगे बढ़ते हुए झनकू को एक और युद्ध में बुरी तरह पराजित किया। इस बीच 14 जनवरी 1761 ई० में अब्दाली ने मराठों को पानीपत के तीसरे युद्ध में पराजित कर दिया। इस युद्ध में नजीबउद्दौला की विशिष्ट भूमिका रही थी जिसका इनाम उसे मिला। अब्दाली ने उसे फिर से अमीर उल उमरा की उपाधि दी तथा मुगल साम्राज्य का मीर बक्शी भी बनाया और धीरे-धीरे वह दिल्ली का सर्वेसर्वा बन गया। भरतपुर के राजा सूरजमल ने उसके वर्चस्व को चुनौती देने की कोशिश की परन्तु वह भी कुछ दिन बाद 1763 में युद्ध में मारा गया।⁹

यह एक विडम्बना ही है कि कूटनीति में माहिर और शक्तिशाली होते हुए भी नजीबउद्दौला अपनी जागीर सुरक्षित नहीं रख पाया। जहाँ एक ओर पानीपत का तीसरा युद्ध मराठों का उत्तर भारत में पतन का कारण बना। वहीं दूसरी ओर इस युद्ध ने सिक्ख शक्ति का उदय किया और अप्रत्यक्ष रूप से पंजाब सिक्खों को सौंप दिया। हम यह भी कह सकते हैं कि एक तरफ तो नजीबउद्दौला के जीवन का सूरज डूब रहा था, दूसरी तरफ सिक्खों के वर्चस्व का सूरज उदय हो रहा था। पानीपत के युद्ध के बाद सिक्खों ने पंजाब और उसके आस पास के क्षेत्रों में अपने हमले तेज कर दिये। पानीपत युद्ध के 3 साल बाद एक विशाल सेना के साथ 1764 में सिक्खों ने यमुना पार ऊपरी गंगा दोआब में प्रवेश किया और सहारनपुर शहर को लूटने के बाद दक्षिण में मुजफ्फरनगर के क्षेत्रों में दूर तक हमले किये और शामली, कांधला, ज्वालापुर, देवबंद, नजीबाबाद आदि क्षेत्रों में दस्तक दी। बंदा बहादुर के बाद यह पहला अवसर था जब सिक्ख सेना ने यमुना पार करके आक्रमण किया। नजीबउद्दौला समय की मांग देखते हुए स्वयं सिक्खों से आकर मिला और उन्हें 11 लाख की फिरौती देकर अपना क्षेत्र सुरक्षित किया क्योंकि हाल ही में नजीबउद्दौला ने सूरजमल को हराकर मार डाला था और उसे सूरजमल के बेटे जवाहर सिंह से कठोर प्रत्युत्तर की उम्मीद थी।¹⁰ पूरा जाट समाज प्रतिशोध के लिए एकजुट हो चुका था जवाहर सिंह ने मराठों व सिक्खों की भी मदद ली। जवाहर सिंह के इन क्रियाकलापों से नजीबउद्दौला परेशान हो गया। उसने

अपने एक दूत को अहमद शाह अब्दाली से मदद प्राप्त करने के लिए कंधार भेजा। नजीब ने जवाहर सिंह से सुलह की कोशिश की परन्तु सफल नहीं हुआ क्योंकि जाटों के लिए यह एक सैनिक कार्रवाई मात्र नहीं थी बल्कि यह उनकी प्रतिष्ठा का प्रश्न था। जाटों और मराठों ने दिल्ली पर हमले तेज कर दिये लेकिन 1767 में नजीब की मदद हेतु अतिरिक्त सैनिक दस्ता आने से जाटों व मराठों की संयुक्त सेना को पीछे हटना पड़ा। लगभग तीन साल बाद हापुड़ में नजीब खाँ भी मर गया।¹¹

नजीब खाँ के बाद उसका छोटा बेटा जाबिता खाँ उसका उत्तराधिकारी बना और अपने पिता की जागीरों को उसने अच्छी तरह संभाला। सहारनपुर उसका आवास था अपने पिता की जागीर संभालने से पहले ही वह राजधानी दिल्ली में अपना प्रभाव जमा चुका था। अब वह अपने पिता की प्रतिष्ठा को बढ़ाने की चेष्टा कर रहा था। उसने राजधानी दिल्ली पर नियंत्रण करने की कोशिश की परन्तु मराठों से भय के कारण उसने शीघ्र ही सहारनपुर पलायन कर लिया क्योंकि वह जानता था कि मराठे पानीपत के युद्ध को भूले नहीं हैं और वे नजीब के घराने के प्रति मन में शत्रु भावना रखते हैं। सहारनपुर पहुँचकर जाबिता खान ने कर देने से इंकार कर दिया साथ ही आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए राशन जमा करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिन बाद ही मराठे अपने आक्रामक इरादों के साथ देह तक पहुँच गये और इसके थोड़ी दूर आगे नजफ खाँ के नेतृत्व में शाही सेना भी मराठों से आ मिली। इस गंभीर स्थिति से भयभीत होकर जाबिता खान अपना सारा माल समेट कर गंगा को पार करके शुक्रताल पहुँच गया। जहाँ उसे हाफिज रहमत खाँ और अन्य साथी भी मिल गये लेकिन 1771 ई० में और भी विकट समस्या उत्पन्न हो गयी क्योंकि मराठों ने हरिद्वार में गंगा वाले रास्ते पर कब्जा कर लिया था। अब जाबिता खान के पास वापसी का भी रास्ता नहीं बचा था। हतोत्साहित होकर उसने अधूरे मन से लड़े गये छोटे से युद्ध के बाद हार मान ली और गौसगढ़ और आस पास के क्षेत्र मराठों को सौंप दिये। जाबिता खान ने शुजाउद्दौला को सहायता के लिए पत्र भेजा।¹² इधर मराठे भी वापस अपने राज्य लौटने के लिए बैचन थे मराठों के लौटते ही जाबिता खाँ ने पुनः अपनी जागीरों पर कब्जा कर लिया लेकिन उसने दूसरे रोहिलाओं का साथ छोड़ दिया।

शुजाउद्दौला के हाथों हाफिज रहमत खाँ की हार और मृत्यु ने रोहिलों के होंसले पस्त कर दिये। जाबिता खान के विश्वासघात का एक उदाहरण थोड़े दिन बाद उस समय देखने को मिला जब उसने गुप्त तरीके से मराठों से साँठ-गाँठ कर ली और अपनी खोई हुई शक्ति दोबारा पा ली और उसे अमीर उल उमरा की उपाधि भी पुनः प्राप्त हो गयी परन्तु नजफ खाँ के प्रभाव के कारण अब दरबार में उसका पहले जैसा रूतबा नहीं रह गया था। इसी समय 1774 में सिक्खों ने फिर यमुना पार कर दोआब में आक्रमण किया जाबिता खाँ ने पैसे देकर उन्हें शांत किया और उनसे गठबंधन करके प्रशासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। आगे बुढ़ाना के पास उसने शाही सेना के साथ भयंकर युद्ध लड़ा फिर मार्च 1776 में जाबिता खाँ ने अपने विरोधी खेमे पर भयंकर हमला किया। जिसमें उसके विरोधी नजफ खान का भाई अब्दुल कासिम खान मारा गया।¹³ धीरे-धीरे उसके हमलों की चपेट में पूरा दोआब आ गया परन्तु फिर उसे नजफ खाँ ने रोक दिया। 1777 में गौसगढ़ के पास भी उसने विरोधियों को धुल चटाई फिर उनके बीच सुलह हो गयी परन्तु अब जाबिता खाँ की शक्ति बिखर चुकी थी हालांकि उसने मुगल बादशाह का समर्थन पुनः प्राप्त कर लिया और उसे सहारनपुर में पुनः नियुक्त कर दिया गया। फिर भी ऐसा आभास होता है कि उसने आगे किसी राजनीतिक गतिविधि में कोई रुचि नहीं दिखाई, अपने आप को जैसे

बिल्कुल शांत सा कर लिया क्योंकि उसके क्षेत्र और उसके आस पास लगातार सिक्ख हमले हो रहे थे, परंतु उसकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। सिक्खों ने 1778 से 1781 तक लगातार हर साल यमुना पार कर तबाही मचाई परन्तु जाबिता खाँ मौन बना रहा।

लेकिन जाबिता खाँ के शांत बने रहने से सिक्खों का यमुना पार के अभियानों का रास्ता साफ नहीं हुआ क्योंकि मिर्जा मुहम्मद शफी ने उनका कठोरता से सामना किया और उन्हें सभी मोर्चों पर हराया और उन्हें वापस यमुना नदी तक खदेड़ दिया। सिक्खों ने जाबिता खान के विश्वासघात को कभी नहीं भूलाया। जब 1783 में पूरा देश भूख, अकाल की चपेट में था हर कोई त्रस्त था सिक्खों ने पुनः हमले शुरू कर दिये। सहारनपुर में तबाही मचाते हुए हरिद्वार के रास्ते देहरादून में भी घुस गये जाबिता खान एक बुत की तरह बिल्कुल शांत था। वह गौसगढ़ में ही डरपोक की भांति शरण लिये रहा और वहीं पर 1785 में उसने अंतिम सांस ली।¹⁴

जाबिता खाँ की मृत्यु के बाद उसका पुत्र गुलाम कादिर उसका उत्तराधिकारी बना। जो बहुत महत्वाकांक्षी, मजबूत इरादों वाला और आक्रामक प्रवृत्ति का इंसान था। सबसे पहले उसने अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए अपने रिश्तेदारों की जमीनें छीन ली। उसका अगला लक्ष्य अपने दादा नजीब उद्दौला के कब्जे वाले क्षेत्रों को फिर से हासिल करना था, अपनी कटिबद्धता के कारण उसने शीघ्र ही वे सब क्षेत्र हासिल भी कर लिये। गौसगढ़ किले को फिर से मजबूती प्रदान की क्योंकि वह जानता था संकट के समय यही किला उसका रक्षा कवच बनेगा। उसकी वीरता का ही परिणाम था कि उसके सामने सिक्खों ने यमुना पार के आक्रमण रोक दिये। परिणामस्वरूप सहारनपुर क्षेत्र में शांति का वातावरण बना रहा। गुलाम कादिर का छोटा सा काल बहुत सी घटनाओं से भरा हुआ है। 1787 में जैसे ही नजफ खान की मृत्यु हुई, गुलाम कादिर ने गंगा यमुना दोआब के रास्ते दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। उसे मालूम था इस समय मराठे भी किसी अन्य जगह युद्ध में व्यस्त हैं और सिंधिया भी जयपुर के साथ युद्ध में उलझा हुआ है और सबसे अच्छी बात उसके लिए यह थी कि खुद महल के प्रभारी मंसूर अली खान ने गुलाम कादिर को निमंत्रण दिया था¹⁵ कि वह अमीर उल उमरा के रिक्त पद को प्राप्त कर ले। मराठों ने रोहिलों को रोकने हेतु एक छोटी सेना की टुकड़ी भेजी परन्तु ये टुकड़ी गुलाम कादिर के इरादों को कमजोर करने में नाकाम रही। गुलाम कादिर ने राजधानी पर कब्जा कर लिया ये सब सुनकर नजफ कुली खान सम्राट की मदद हेतु आया परन्तु गुलाम कादिर अपनी जगह डटा रहा।

बाद में सुलह हो जाने पर उसका नियंत्रण अलीगढ़ तक हो गया। इस प्रकार अमीर उल उमरा गुलाम कादिर विजयी होकर सहारनपुर वापस आ गया। इसके एक वर्ष बाद ही गुलाम कादिर ने पुनः दिल्ली पर हमला कर दिया। वह बादशाह शाहआलम द्वितीय द्वारा मराठों से मदद मांगने के कारण क्रोधित था। इसी कारण वह शाही महल को लूटने आ पहुँचा था विश्वासघातियों ने उसे किले में प्रवेश करने में मदद की। गुलाम कादिर ने महल के अंदर लूटपाट शुरू कर दी परन्तु उसे उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप धन नहीं मिला।¹⁶ जिसका सारा गुस्सा उसने बादशाह पर उतारा और शाहआलम को अंधा कर दिया इस लूटपाट के दौर में गुलाम कादिर को खबर मिली कि अब मराठों का आक्रमण राजधानी पर होने ही वाला है। गुलाम कादिर भागने लगा परन्तु वह घेराबंदी को पार नहीं कर सका और पकड़ा गया। घोर यातनाएँ देकर उसे मार दिया गया। इस प्रकार एक लंबे अरसे से सहारनपुर में चल रहे रोहिलों के प्रभाव का अंत हुआ। अब यहाँ मराठों का अधिकार हो गया। बांदा के गर्वनर गनी बहादुर ने सहारनपुर के कुछ

क्षेत्र सिक्खों को देकर शांति स्थापित करने की कोशिश की। 1790 ई० में जगाधरी, मंगलौर, जौरासी और ज्वालापुर परगना के लंदौरा आदि रियासतों पर सिक्ख सरदार राय सिंह व उसके भतीजे शेर सिंह ने कब्जा कर लिया।¹⁷ यद्यपि अगले वर्ष नव नियुक्त गर्वनर भैरो पंत ने इन्हें आत्म समर्पण करने के लिए मजबूर किया लेकिन इन दोनों के होंसले बुलंद थे। इन्होंने नकुड़ पर अधिकार कर लिया और सुल्तानपुर के भी बहुत बड़े क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। 1794 ई० में माधोजी सिंधिया की मृत्यु से मराठों को गहरा आघात पहुँचा। जिसका लाभ सिक्खों ने उठाने का प्रयत्न किया और उन्होंने यमुना पार फिर से हमले करने प्रारंभ कर दिये। मराठा सेनाओं को सहारनपुर से हटने के लिए मजबूर होना पड़ा और मराठा सेना ने सहारनपुर को छोड़कर जलालाबाद में आकर शरण ली लेकिन सिक्खों का पश्चिम में अपने रिश्तेदारों के साथ की गई साजिशों के चलते इस क्षेत्र में बने रहना मुश्किल हो गया और सिक्खों ने शामली पर हमला कर दिया। उसके बाद सिक्खों ने लखनौती पर आक्रमण किया जहाँ पहले से ही तुर्कमान बहराम अली खान के नेतृत्व में विद्रोह कर रहे थे। उन्होंने करनाल के पास एक के बाद एक लगातार चार युद्धों में उन्हें हरा दिया। इसलिए अब मजबूरी में सिक्खों ने 1797 में सहारनपुर को छोड़कर हरियाणा में अपनी किस्मत आजमाने का निश्चय कर लिया।

1799 में यह सहारनपुर के आस पास का क्षेत्र इमाम बख्श खान के अधीन था। इमाम बख्श खान का एक प्रतिनिधि शिंभूनाथ नामक बनिया था, जो उसकी ओर से अलीगढ़ के तत्कालीन सेनापति जनरल पेरान के विरुद्ध बहादुरी से लड़ा परन्तु पेरान से पराजित हुआ और उसे रिश्वत देकर उसने खुद की और अपने सैनिकों के प्राणों की रक्षा की। इस कार्यवाही से उत्साहित होकर पेरान ने खतौली के पास शिंभूनाथ और उसके सिक्ख मित्रों को फिर से बुरी तरह हराया¹⁸ और सिक्खों की लगभग सभी जागीरों पर कब्जा कर लिया परन्तु अभी भी पेरान की सहारनपुर जिले पर पकड़ मजबूत नहीं हो पायी थी क्योंकि जिले का महत्वपूर्ण क्षेत्र अभी लंदौरा रियासत के रामदयाल और सिक्खों के अधिकार में था। रामदयाल शक्तिशाली भी था और हाल में ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन देवबंद के पास बचीटी में एजाज खान को हरा कर चुका था। एजाज खान ने अपने आप को गुलाम कादिर बताकर इस क्षेत्र में गूजरों के खिलाफ एक बड़ा विद्रोह किया था लेकिन अंग्रेजों के इस क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद वह भी शांत हो गया। आखिरकार द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध के समय सिंधिया व अंग्रेजों के मध्य सुर्जी अर्जनगाँव की सन्धि होने के साथ ही सहारनपुर और आस पास का सारा दोआब क्षेत्र ब्रिटिशों के अधीन आ गया¹⁹ और एक शताब्दी से चल रहे क्षेत्रीय शक्तियों के शक्ति प्रदर्शन का खेल भी खत्म हुआ।

निष्कर्ष

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का विघटन तेजी से हुआ और क्षेत्रीय शक्तियों ने अपने स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी और अपनी-अपनी शक्तियों का विस्तार करने में जुट गये। औरंगजेब की मृत्यु के अगले ही वर्ष गुरु गोविंद सिंह जी की भी मृत्यु हो गई परन्तु अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने बंदा बहादुर को सिक्ख सेना की कमान सौंप दी और बंदा बहादुर ने अपनी जिम्मेदारी को बखूबी संभाला भी। बंदा बहादुर ने गुरु गोविंद के बेटों की कुर्बानी का प्रतिशोध मुगल सूबेदार वजीर खान से लिया और कई बार यमुना पार करके गंगा यमुना दोआब में मुगल क्षेत्रों पर लगातार हमले किये। 1716 में फर्रुखसियर ने बंदा बहादुर को मृत्यु दंड दे दिया लेकिन फर्रुखसियर भी ज्यादा दिन नहीं बच पाया। उसे सैय्यद

बंधुओं ने खत्म करके मुगल साम्राज्य पर अपनी मजबूत पकड़ का प्रदर्शन किया। 1713 से 1720 तक का युग सैय्यद बंधुओं का युग रहा। इन दोनों भाईयों ने मुगल प्रशासन में जो चाहा वो कर दिखाया। सैय्यदों के पतन के बाद रोहिलों ने मुगल प्रशासन विशेषकर सहारनपुर और आस पास के क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित किया। इन रोहिला सरदारों में नजीबउद्दौला, उसका पुत्र जाबिता खाँ व पौत्र गुलाम कादिर थे। उधर यमुना पार से भी बार-बार दोआब में आक्रमण होते रहे। जिसका मुख्य शिकार सहारनपुर और आस पास के क्षेत्र होते रहे। 1803 में लार्ड लेक ने सिंधिया से सन्धि के तहत दिल्ली पर अधिकार कर लिया और इस सन्धि के तहत ही सहारनपुर और दूसरे क्षेत्र अंग्रेजों के अधीन आ गये। उधर गुलाम कादिर की मृत्यु के साथ रोहिलों का भी प्रभुत्व समाप्त हो गया था। इस प्रकार 1803 में सहारनपुर में ब्रिटिश प्रशासन प्रारम्भ हो गया।

संदर्भ

1. दिलगीर, हरजिंदर सिंह, हू आर द सिक्ख, यूनिवर्सिटी प्रेस, बेल्जियम, 2007, पृ० 38।
2. सिंह, गगनदीप और गुरविन्दर सिंह, लौहगढ़ हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी, पंचकुला, हरियाणा, 2022, पृ० 90।
3. वही, पृ० 91।
4. वही, पृ० 92।
5. वही, पृ० 93।
6. सरकार, जदूनाथ, फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, Vol. 1, एम०सी० सरकार एंड संस कलकत्ता, 1932, पृ० 4-5।
7. वही, पृ० 42-43।
8. सरकार, जदूनाथ, फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, Vol. 2, एम०सी० सरकार एंड संस कलकत्ता, 1934, पृ० 120।
9. गुप्ता, हरिराम, हिस्ट्री ऑफ द सिक्ख, Vol. 3, मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2009, पृ० 48।
10. गाँधी, सुरजीत सिंह, सिक्ख इन दी एहीनंथ सेंचुरी, सिंह ब्रदर्स, बाजार माय सेवान, अमृतसर, 1999, पृ० 290।
11. सरकार, जदूनाथ, फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, Vol. 3, एम०सी० सरकार एंड संस कलकत्ता, 1938, पृ० 28।
12. वही, पृ० 40-41।
13. नेविल, एच०आर०; सहारनपुर गजैटियर्स, वॉल्यूम-2 ऑफ द डिस्ट्रिक्ट गजैटियर्स ऑफ द यूनाइटेड प्रोविंसेज आगरा एंड अवध, यूनाइटेड प्रोविंसेज गवर्नमेंट प्रेस, प्रयागराज, 1909, पृ० 193।
14. वही, पृ० 195।
15. सरकार, जदूनाथ, फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, Vol. 3, एम०सी० सरकार एंड संस कलकत्ता, 1938, पृ० 232।

16. सरकार, जदूनाथ, फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, Vol. 4, एम०सी० सरकार एंड संस कलकत्ता, 1950, पृ० 318।
17. नेविल, एच० आर०; सहारनपुर गजैटियर्स, वॉल्यूम-2 ऑफ द डिस्ट्रिक्ट गजैटियर्स ऑफ द यूनाइटेड प्रोविंसेज आगरा एंड अवध, यूनाइटेड प्रोविंसेज गर्वनमेंट प्रेस, प्रयागराज, 1909, पृ० 196।
18. गुप्ता, हरिराम, हिस्ट्री ऑफ द सिखज़, Vol. 3, मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2009, पृ० 295।
19. वही, पृ० 308।